उपभोक्तावाद की संस्कृति

पाठ का सार / प्रतिपाद्य

उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ बहुत से मुद्दों पर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। यह पाठ बाज़ार के मोह से ग्रस्त समाज की भयानक स्थिति को दर्शाता है। यह हमें बताता है कि कैसे विज्ञापन हमें भ्रमित कर रहे हैं। हम स्वयं सच्चाई से दूर झूठ को सच मानकर अपने पैसों का गलत प्रयोग कर रहे हैं। इसी कारण समाज में दिखावे की प्रवृत्ति को स्थान मिला है। इसने ऐसा रोग समाज में फैलाया है कि आगे चलकर अशांति, असंतोष, लालच आदि भाव मनुष्य के पतन का कारण बन सकते हैं।

उपभोक्तावाद की संस्कृति के दुष्परिणाम

- मनुष्य का उत्पाद के प्रति समर्पित भाव।
- सुख के प्रति मनुष्य की सोच में परिवर्तन।
- स्वदेशी चीज़ों के प्रति देशवासियों में उपेक्षाभाव।
- अशांति, असंतोष तथा लालच इत्यादि के भाव का विस्तार।
- अपनी संस्कृति के प्रति उपेक्षा तथा विदेशी संस्कृति के प्रति रुझान।
- सामंतीवादी संस्कृति का बदला हुआ रूप समाज में दृष्टिगोचर होना।
- मनुष्य में लालच, दिखावा, असंतोष और प्रतिस्पर्धा की भावना का विस्तार।
- विदेशी ब्रांड के प्रति लोगों में विश्वास। इसके कारण देश के पैसे का विदेश में गमन।

पाठ का उद्देश्य

- उपभोक्तावादी संस्कृति के विस्तार से होने वाली विषमताओं से परिचय करवाना।

पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

- इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि सच्चे सुख को जाने तथा समाज व जीवन को नष्ट करने वाली संस्कृति तथा सोच का नाश करें।